सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केंद्र
नई दिल्ली

संक्षिप्त नोट
'विद्यालयी शिक्षा में संग्रहालयों की भूमिका' विषय पर कार्यशाला

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (सीसीआरटी) सेवारत अध्यापकों हेतु कार्यशालाएँ आयोजित करता है, जो कि भिन्न-भिन्न भागों के अध्यापकों को अपनी संस्कृति के आदान-प्रदान का अवसर प्रदान करती हैं, ताकि प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक धरोहर की विविधता और समृद्धि के प्रति वे सराहना की भावना उत्पन्न कर सकें।

इस कार्यशाला का केन्द्र बिंदु विद्यालयी शिक्षा में संग्रहालयों की भूमिका का अध्ययन है। जैसा कि कक्षा में होता है व्याख्यान, वीडियो या आदि कई तरीकों से शिक्षक छात्रों को जानकारी देते हैं। संग्रहालयों का भ्रमण केवल मनोरंजन ही नहीं होता इसे कक्षा में चर्चा की गई सामग्री के पूरक के रूप में भी उपयोग कर सकते हैं। ऐसी भौतिक चीजें जिनकी जानकारी बच्चों को पहले से ही हो कक्षा में उनके दृश्य ज्ञान से जुड़कर उनके अनुभव को आसान बनाते हैं। जब समान सूचना के दोनों पक्ष मिल जाते हैं तो छात्र आसानी से विषयगत चीजों को पूर्ण रूप से समझ पाते हैं और आगे की शिक्षा में सफलतापूर्वक उसका उपयोग करते हैं।

वर्तमान में संग्रहालय शिक्षण केंद्र बन गए हैं और केवल एक संग्रह स्थान न रहकर उससे भी आगे निकल गए हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 भी इस बात को दोहराती है कि शिक्षा केवल किताबी तथ्य न रहे बल्कि प्रयोगात्मक शिक्षण के रूप में विस्तारित हो।

कार्यशाला के दौरान प्रतिभागी एक व्यावहारिक कार्य योजना भी विकसित करेंगे जो छात्रों में वस्तुओं का ऐतिहासिक मूल्य, विविध संस्कृतियों का सम्मान, बहुसंस्कृतिवाद को समझना और भारत के जिम्मेदार नागरिक के रूप में तैयार करने के लिए प्रेरित करती है। शिक्षकों को संग्रहालय की परिभाषा को समग्र रूप से गत्यात्मक रूप में समझना सिखाया जाएगा। जहां संग्रहालय को केवल साइट विजिट या कलाकृतियों के संग्रह के स्थान के रूप में नहीं, बल्कि एक गतिशील और रचनात्मक स्थान के रूप में माना जाता है और जिससे एक छात्र/शिक्षार्थी के रूप में शिक्षकों को सभी प्रकार की प्रदर्शन, दृश्य और साहित्यिक कलाओं का अनुभव मिल सकता है। वह महत्वपूर्ण संग्रह को 'कॉर्नर/गैलरी' के रूप में विकसित करना भी सीखेंगे और अधिकतम पहुंच पाने के लिए इंटरैक्टिव डिजिटल प्लेटफॉर्म भी बनाएंगे।

यह कार्यशाला प्रतिभागियों को संग्रहालय शिक्षा के बारे में सैद्धांतिक पृष्ठभूमि के साथ-साथ व्यावहारिक दिशानिर्देश भी देती है ताकि पाठ्यक्रम और विद्यालयी जीवन के क्षेत्रों में गतिविधियों को एकीकृत करें और कार्यक्रम को लागू करें। चर्चाएँ, संग्रहालय भ्रमण और समूह कार्य द्वारा प्रतिभागियों के बीच विचारों और अभ्यास के आदान-प्रदान को मजबूत करेंगे।

इन कार्यशालाओं में शिक्षकों को इसलिए आमंत्रित किया जाता है ताकि वें विद्यालयी छात्रों को इस तरह सम्वेदनशील बनाएं जिससे उन्हें यह बोध हो कि वे किताबों से क्या सीख रहे हैं और अपने ज्ञान को किस प्रकार बढ़ा सकते हैं।

कार्यशाला की अवधि लगभग 05 कार्य दिवसों की होती है।

उद्देश्य:

- संग्रहालयों को शिक्षण केंद्र के रूप में उपयोग करने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करना और संग्रहालय की कलाकृतियाँ द्वारा सीखने का अवसर प्रदान करना;
- अपने क्षेत्र और देश की सांस्कृतिक धरोहर के प्रति सराहना की भावना पैदा करना:
- संग्रहालयों का भ्रमण करते समय छात्रों के लाभ के लिए कार्यपत्रक/गतिविधि पत्रक विकसित करना;
- छात्रों को संग्रहालयों के महत्व को समझाना और उन्हें विद्यालयों में 'संग्रहालय कॉर्नर' के विचार के साथ सामग्री एकत्र करने और संरक्षित करने के लिए प्रेरित करना।

कार्यशाला में व्याख्यान, स्लाइड प्रस्तुतियाँ, संरक्षण गतिविधियाँ, स्मारकों और संग्रहालयों का अध्ययन, समूह चर्चाएँ, आदि शामिल हैं। विद्यालयी शिक्षा में संग्रहालयों के महत्व को बताने के लिए शैक्षिक सहायता और खेल, कार्य-पत्रक और गतिविधि-पत्रक की तैयारी पर सत्र रखे जाते हैं।

'व्यवहारिक एवं क्रियाशील' अनुभव के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय, भारतीय सांस्कृतिक निधि (इन्टैक), राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन, शिल्प संग्रहालय, विज्ञान संग्रहालय और सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद, आदि के विशेषज्ञों को आमंत्रित किया जाएगा।

उक्त कार्यशाला के सफल समापन के बाद भाग लेने वाले शिक्षक के माध्यम से सीसीआरटी सांस्कृतिक शैक्षिक किट स्कूल को उपहार में दी जाती है।